नं० ५४६३ — ब

सुदामा जीकी ज्ञानबाराखड़ी
पत्राणि १६ (संपूर्ण)
(हिन्दी भक्ति काव्य)

नं० ५४६३-घ
सुदामा जी की ज्ञान बारारखड़ी
पत्राणि १६ (सम्पूर्ण)
(हिन्दी भक्ति काव्य)

ॐ श्रीरामाय नमः ॥ ॐ ककाकम
लनयननारायणस्वामी ॥
वसेह्याविकांश्रैतेस्वामी ॥
ॐ ककाकालिजगनामुख
पावांग्रमसमितेमवतनो

नं० १००२ क
सुदामाजी की
ना चरित-
[illegible]
१५ पत्र
कवित्त
हिन्दी
(काव्य)

वा
१

पारा। साधुसंगतानिमिलिहरि
रसुपीजै॥ जीवनजनमसुफ-
लकरिलीजै॥ ५॥ विवाविवेको
सकलजहाना। जाकोगावे
वेदपुराना॥ निरभैनामहृ

रीकोलीजै । वरलाकमकोप्या
नधरीजै ॥ ५॥ मागाएनवोवि
दकोगावो ॥ मायाजालमल
ज़ातिजावो ॥ यक्लोवतनुन
रेंगपतेगा । छिनमेछारह्य

वा
७

नमवंत्रगा॥२॥घघाघटघटघट
वेल्हेभाई॥जलथलमेंप्र·
भुहैसमाई॥उचनीचबतात
कहिहैलो॥पकहिखलसमक
लमैलोवो॥५॥ननातेयाम

विजकोदिदेवो ॥ उजाग्रोरन
हिकोलिवो ॥ समदीपग्रोरः
वूलेडा ॥ नामाहिक्षाई रह्मोनव
विडा ॥ ५ ॥ चचावैनानिद्वेक
रिलावो ॥ मिथ्यावादफुटम

वा॰
३

नभाखे॥ सनमशाहूतपह्लेतश
माना॥ कूटवचनमोहिपापम
माना॥ ध॥ छछाछलवलन
जोविकाना॥ निरभयनामज
पोपकसाना॥ कामक्रोधके

तेजोअंसेगा ॥७॥ जजाजपोजः
गतपतिपेसा। जाकोध्यावेस
रतैतैसा ॥ तिसिवासररहैलो
लाई ॥ हरिपदचरनकमलः
ह्यावदाई ॥८॥ रुफायेवनः

वा. किजैभार्द॥ स्निम्यपरकालस्ट्टा
५. मेउर्द्रा॥ चेननह्रायह्ररिसर
नेर्द्रांद्देय॥ कालत्र्यामकन्नह्रेके
सांद्देय॥ स॥ ननातिमखतिम
विह्ररित्रपातेह्राये॥ चितने

ध्यान पलक जाति छोरो ॥ छोके 15
जाम है लोलाए ॥ चितवत
नैम है समाई ॥ १५ ॥ टटोटो॰
जगानके नाता ॥ नहि कोई मा
न पिता हम त भ्राता ॥ हरिसो ही

बा नेनह्मेकोस्त्रपना। जगाथो
५ ह्मारेनेकोसपना॥ ११ ॥ टटा
ठाकुरपरम सनेह्मो॥ जिह्मप
ह्मेदोह्मीमेटरहीह्मो॥ नारदोह्मी
कोलाह्मलीजे॥ प्रेममगनह्मे

यद्दीरसर्पोजं॥ ५॥ इउउमा
ङेलाचितजानेकारो॥ ष्टिदेण्
नभ्रातेकैधरो॥ ग्रनदेवका
हैकोप्पावो॥ हदविष्ठासरा
मधनगावो॥ ७॥ ढबाढ्व

वा
६

कोकह्राजायेभार्ज्ञ ॥ स्फोत्रोम
प्रभुह्रासमार्थ ॥ पिंड्ब्रालड
ह्लेभघ्रा ॥ सदांनिकटः
ह्रेताह्निनह्रा ॥ ४ ॥ तात्ता
नैहह्रैसौलावो ॥ श्रेमसः

6

हितप्रभुकेगुणगावो॥३वि
यप्रमतजोमनभ्राता॥ सं
नजननकोकोंजेसाता॥ ४
ननातेरीहफलकमाई॥ त
देहिहेमिमानकोपाई॥ दी

बा॰
७

भजिगर्भिकासेनेछुदे । रामना
मघैर्मेघयनलोके ॥ १८ ॥ पथ्या
थोरोज्जीवनभाई । हृदिविव्व
जन्मश्रकारयजाई । चैननद्र
पहलिामउचारा ॥ ननाके

त्रिविधतापतिनवाे ॥ १७ ॥ ददा
देवतहिकेजगमोहारा ॥ मा
याजालवंधेसंसारा ॥ बंधनः
सेछोछुटेचाहिये ॥ सतनजाय
संतनकोचाहिये ॥ १८ ॥ पपायः

वा
८

रनीयगाहिरहैयपरभाई॥ संतनके
प्रभुसदासमहाई॥ सदासमीप॰
तिमरवनहिदूटरही॥ संतजन
नकोरतनाकरहो॥ ३॥ नना॰
नामनिरंतरलीजे॥ संतजन

नकोसेवाकोजै ॥ साचिमलिः
भगवानकेभागे ॥ प्रेमसहि
नप्रभुकेगुनगावे ॥ १ ॥ पपा
पैपैसवजनमगामायो ॥ ग
नावादप्रभुकेनहैगायो ॥

वा मायाभरमभूलिरहोग्रेथा ||
२ नमगामायोकरिकरिथंथा || ११
फफाफिरिफिरिपरोमोह
केफंदा || ग्रवझनचेत्याम्हर
विग्रथा || गरुचरननाकेथ

रोमतत्रासा॥ हरिभजंकेटका
लोकेद्यासा॥ १४॥ बवावेलोस्य:
रतवानी॥ रनेहमीतिप्रेमरः
ससानी॥ हरिहीनाहटेयराग
लो॥ कुटकववनसलतेज~

वा·
१·

निभावे॥२३॥भभाभ्लोमन
ममुफाबो॥जामेभवजलफे
तिन्त्राबो॥त्रैमोभक्रिकोम
नमोरा॥जासेजरामरनहोय
नहितेरा॥२५॥ममामोहजा

॥ लभवसागरभारी ॥ धीमरक
लमीनसैसारी ॥ जालालिये·
जमफिरतग्रहेरा ॥ हीयविम
खिनपरहेनदेरा ॥ २५ ॥ घघा
येहअवसरनहिंवारंवारा ॥

वा ॥ तंतेप्रतित्रविकरानप्रकाश ॥
मन्वाभिच्र न्मचनरस्तजा
ना ॥ विवरस्थाभिजोभः
गवाता ॥ २५ ॥ ताराटनेरि
मोलावो ॥ ह्रोराजन्मजातिवा

दगमाये॥ पमोह्रीराजोगम
जैहै॥ श्रीमरत्रकाफेरिपछैन
है॥ १९॥ लल्लालाल्प्रमोलक
मनहरता॥ ननभेआरजनन्
करथरता॥ प्रभलमालगरुदे

बा· वलिवाये॥ नेस्मालोभसव
१२ ड्रगमाथ्यो॥ २५॥ ववाउनपु
हकिवलीद्रारिङ्येय॥ जीन
मेवत्त्वगोचरलेये॥ वाप
वारनमाउमाथ्या॥ उनयरक

मलचरनसतराना ॥ २९ ॥ समा
सतगुरु किकहाकोरोवजाहि ॥
महिमाअमितकछुवरानि·
नजाई ॥ चितलागोसतगुरु
कीचरना ॥ रसनापककहाल

वा
१२
13

गिरवन्ता॥२०॥ घघांघंचिलि·
योत्रहस्त्रपतिश्रोण॥ मायां
फंदपलकमैनोरा॥ तिथैम
यांसर्वेमरूपागो॥ जवाहित्र
हवनंनताविंननलागी॥२१॥

शरणशोचविचारमेसौजेय
जवसे॥ दीपकज्ञानदियोत्र
हृजवसे॥ नाशोतिमरजुवभ·
यैयकामा॥ मनोरविकिर
नकरभामा॥ भय॥ हदाहरि॰

वा

१४

गयेपापपपगाद्वैतपाथ॥ श्री·

गुरुचरनकमलपनाथ॥ जै

श्रेयंयचंद्रंदीसैवेगा॥ श्रगाटेमा

नुजवभोगाजैगा॥ ४॥ लला

लैनेकोहैहरिकोनामा॥ दैन

14

केस्त्रवरानसमाना॥ यनेके
हेग्रभ्रकोध्याना॥सेवनेको
गुरुचरानसमाना॥ ३५॥ छुक
छुटेजोविविवंधनसेवाहि
ये॥ सनगुरुचरानसमानह्रेय

बा रहिये। नाममधुरा रसपियो
१५ सुजाना॥ गर्भवासमनहिहोन
पयाना॥ ३५॥ वारापारविदितान
तनगावो॥ सवसंतनकोसि
रनिवावो॥ दिनपतिनदा·

ससुदामा ॥ नमस्कारगुरदेव
प्रनामा ॥ २८ ॥ इतिश्रीसुदामा
जीकिज्ञानठा गावणीसंपूर्णम

नैष०

१२८

